जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र (फोल्डर नं. ००१२३३)

मुख्य टाईटल

समर्पण

प्रकाशकीय

सम्पादकीय

प्रस्तुत आगम-प्रकाशन के विशिष्ट अर्थ सहयोगी श्रेष्ठिप्रवर, श्रावकवर्य पद्मश्री मोहनमलजी सी. चोरडिया

प्रस्तावना

विषयानुक्रम

जम्बूद्दीवपण्णत्तिसूत्तं

प्रथम वक्षस्कार

- सन्दर्भ ---------- ३
- जम्बूद्वीप की अवस्थिति ---------- ४
- जम्बूद्वीप की जगती : प्राचीर ---------- ५
- वन-खण्ड : भूमिभाग ---------- ६
- जम्बूद्वीप के द्वार ---------- ७
- जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र का स्थान : स्वरूप ---------- ८
- जम्बूद्वीप में दक्षिणार्ध भरत का स्थान : स्वरूप ---------- ९
- वैताढ्य पर्वत ---------- ११
- सिद्धायतनकूट ---------- १७
- दक्षिणार्ध भरतकूट ---------- २१
- जम्बूद्वीप में उत्तरार्ध भरत का स्थान : स्वरूप ---------- २३
- ऋषभकूट ---------- २५

द्वितीय वक्षस्कार

- भरतक्षेत्र : काल-वर्तन ---------- २७
- काल का विवेचन : विस्तार ---------- २९
- अवसर्पिणी : सुषमासुषमा ---------- ३१
- द्रुमगण ---------- ३४
- मनुष्यों का आकार-स्वरूप ---------- ३५
- मनुष्यों का आहार ---------- ४१
- मनुष्यों का आवास : जीवन-चर्या ---------- ४२
- मनुष्यों की आयु ---------- ५०
- अवसर्पिणी : सुषमा आरक ---------- ५१
- अवसर्पिणी : सुषमादुःषमा ---------- ५२
- कुलकर-व्यवस्था ---------- ५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभ : गृहवास : प्रव्रज्या ---------- ५५
साधना : कैवल्य : संघसंपदा ---------- ६१
परिनिर्वाण : देवकृतमहामहिमा : महोत्सव ---------- ६७
अवसर्पिणी : दुःषमासुषमा ---------- ७४
अवसर्पिणी : दुःषमा आरक ---------- ७५
अवसर्पिणी : दुःषमदुःषमा ---------- ७६
आगमिष्यत् उत्सर्पिणी : दुःषमदुःषमा, दुःषमकाल ---------- ८१
जल-क्षीर-धृत-अमृतरस-वर्षा ---------- ८१
सुखद परिवर्तन ---------- ८३
उत्सर्पिणी : विस्तार ---------- ८४
तृतीय वक्षस्कार
विनीता राजधानी ---------- ८७
चक्रवर्ती भरत ---------- ८७
चक्ररत्न की उत्पत्ति : अर्चा : महोत्सव ---------- ९०
भरत का मागधतीर्थाभिमुख प्रयाण ---------- ९७
मागधतीर्थ-विजय ---------- १०२
वरदामतीर्थ-विजय ---------- १०६
प्रभासतीर्थ-विजय ---------- १११
सिन्धुदेवी-साधना ---------- ११२
वैताढ्य-विजय ---------- ११४
तमिस्रा-विजय ---------- ११५
निष्कुट-विजयार्थ सुषेण की तैयारी ---------- ११६
चर्मरत्न का प्रयोग ---------- ११८
विशाल विजय ---------- ११९
तमिस्रा गुफा : दक्षिणद्वारोद्घाटन ---------- १२१
काकणीरत्न द्वारा मण्डल-आलेखन ---------- १२४
उन्मग्नजला, निमग्नजला महानदियाँ ---------- १२६
आपात किरातों से संग्राम ---------- १२८
आपात किरातों का पलायन ---------- १३०
मेघमुख देवों द्वारा उपद्रव ---------- १३४
छत्ररत्न का प्रयोग ---------- १३६
आपात किरातों की पराजय ---------- १३९
चुल्लहिमवंत-विजय ---------- १४३
ऋषभकूट पर नामांकन ---------- १४६
नमि-विनमि-विजय ---------- १४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खण्डप्रपात-विजय ---------- १५१
नवनिधि-प्राकट्य ---------- १५३
विनीता-प्रत्यागमन ---------- १५७
राज्याभिषेक ---------- १६४
चतुर्दशरत्न : नवनिधि : उत्पत्तिक्रम ---------- १७५
भरत का राज्य : वैभव : सुख ---------- १७५
कैवल्योद्भव ---------- १७६
भरतक्षेत्र : नामाख्यान ---------- १७९
चतुर्थ वक्षस्कार
चुल्लहिमवान् ---------- १८०
पद्मह्रद ---------- १८१
गंगा, सिन्धु, रोहितांशा ---------- १८५
चुल्लहिमवान् वर्षधर पर्वत के कूट ---------- १९०
हैमवत वर्ष ---------- १९३
शब्दापाती वृत्तवैताढ्य पर्वत ---------- १९४
हैमवत वर्ष नामकरण का कारण ---------- १९५
महाहिमवान् वर्षधर पर्वत ---------- १९६
महापद्मद्रह ---------- १९७
महाहिमवान् वर्षधर पर्वत के कूट ---------- २००
हरिवर्ष क्षेत्र ---------- २०१
निषध वर्षधर पर्वत ---------- २०२
महाविदेह क्षेत्र ---------- २०७
गन्धमादन वक्षस्कार पर्वत ---------- २०९
उत्तर कुरु ---------- २११
यमकपर्वत ---------- २१२
नीलवान्द्रह ---------- २१९
जम्बूपीठ, जम्बूसुदर्शना ---------- २२०
माल्यवान् वक्षस्कार पर्वत ---------- २२५
हरिस्सहकूट ---------- २२६
कच्छ विजय ---------- २२७
चित्रकूट वक्षस्कार पर्वत ---------- २३२
सुकच्छ विजय ---------- २३३
महाकच्छ विजय ---------- २३४
पद्मकूट वक्षस्कार पर्वत ---------- २३४
कच्छकावती (कच्छावती) विजय ---------- २३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवर्त विजय -- २३५
नलिनकूट वक्षस्कार पर्वत -- २३६
मंगलावर्त विजय -- २३६
पुष्कलावर्त विजय -- २३७
एकशैल वक्षस्कार पर्वत -- २३७
पुष्कलावती विजय --- २३८
उत्तरी शीतामुख वन --- २३८
दक्षिणी शीतामुख वन --- २३९
वत्स आदि विजय -- २४०
सौमनस वक्षस्कार पर्वत --- २४१
देवकुरु --- २४३
चित्र-विचित्रकूट पर्वत -- २४३
निषधद्रह --- २४३
कूटशाल्मलीपीठ --- २४४
विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत -- २४४
पक्ष्मादि विजय -- २४८
मन्दर पर्वत -- २५०
नन्दन वन -- २५५
सौमनस वन -- २५८
पण्डक वन -- २५९
अभिषेक-शिलाएँ --- २६०
मन्दर पर्वत के काण्ड -- २६३
मन्दर के नामधेय -- २६४
नीलवान् वर्षधर पर्वत -- २६४
रम्यकवर्ष --- २६६
रुक्मी वर्षधर पर्वत -- २६७
हैरण्यवत वर्ष -- २६८
शिखरी वर्षधर पर्वत --- २६९
ऐरावत वर्ष --- २७०

पंचम वक्षस्कार

अधोलोकवासिनी दिक्कुमारिकाओं द्वारा उत्सव -- २७२
ऊर्ध्वलोकवासिनी दिक्कुमारिकाओं द्वारा उत्सव -- २७६
रुचकवासिनी दिक्कुमारिकाओं द्वारा उत्सव --- २७८
शक्रेन्द्र द्वारा जन्मोत्सवार्थ तैयारी -- २८४
पालकदेव द्वारा विमानविकुर्वणा --- २९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शक्रेन्द्र का उत्सवार्थ प्रयाण ---------- २९३
ईशान प्रभृति इन्द्रों का आगमन ---------- २९७
चमरेन्द्र आदि का आगमन ---------- २९९
अभिषेक-द्रव्य : उपस्थापन ---------- ३०१
अच्युतेन्द्र द्वारा अभिषेक : देवोल्लास ---------- ३०३
अभिषेकोपक्रम ---------- ३०६
अभिषेक-समापन ---------- ३०९
षष्ठ वक्षस्कार
स्पर्श एवं जीवोत्पाद ---------- ३१२
जम्बूद्वीप के खण्ड, योजन, वर्ष, पर्वत, कूट, नदियाँ आदि ---------- ३१२
सप्त वक्षस्कार
चन्द्रादि संख्या ---------- ३१९
सूर्य-मण्डल-संख्या आदि ---------- ३१९
मेरु से सूर्यमण्डल का अन्तर ---------- ३२१
सूर्यमण्डल का आयाम-विस्तार आदि ---------- ३२३
मुहूर्त-गति ---------- ३२५
दिन-रात्रि-मान ---------- ३२८
ताप-क्षेत्र ---------- ३३०
सूर्य-परिदर्शन ---------- ३३३
क्षेत्र-गमन ---------- ३३४
ऊर्ध्वादि ताप ---------- ३३७
ऊर्ध्वोपपन्नादि ---------- ३३७
इन्द्रच्यवन : अन्तरिम व्यवस्था ---------- ३३८
चन्द्र-मण्डल : संख्या : अबाधा आदि ---------- ३४०
चन्द्र-मण्डलों का विस्तार ---------- ३४३
चन्द्रमुहूर्तगति ---------- ३४६
नक्षत्र-मण्डलादि ---------- ३४८
सूर्यादि-उद्गम ---------- ३५१
संवत्सर-भेद ---------- ३५२
मास, पक्ष आदि ---------- ३५५
करणाधिकार ---------- ३५८
संवत्सर, अयन, ऋतु आदि ---------- ३५९
नक्षत्र ---------- ३६०
नक्षत्र-योग ---------- ३६१
नक्षत्र-देवता ---------- ३६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नक्षत्र-तारे -- ३६३
नक्षत्रों के गोत्र एवं संस्थान-- ३६३
नक्षत्र चन्द्रसूर्ययोग-काल --- ३६५
कुल-उपकुल-कुलोपकुल : पूर्णिमा, अमावस्या --- ३६७
मास-समापक नक्षत्र --- ३७३
अणुत्वादि-परिवार --- ३७८
गतिक्रम-- ३८०
विमानवाहक देव --- ३८२
ज्योतिष्क देवों की गति : ऋद्धि --- ३८७
एक तारे से दूसरे तारे का अन्तर-- ३८८
ज्योतिष्क देवों की अग्रमहिषियाँ -- ३८८
गाथाएँ-ग्रह -- ३९०
देवों की काल-स्थिति -- ३९१
नक्षत्रों के अधिष्ठातृ देवता-- ३९२
नक्षत्रों का अल्पबहुत्व -- ३९३
तीर्थंकरादि-संख्या --- ३९३
जम्बूद्वीप का विस्तार-- ३९५
जम्बूद्वीप : शाश्वत : अशाश्वत --- ३९६
जम्बूद्वीप का स्वरूप -- ३९७
जम्बूद्वीप नाम का कारण --- ३९७
उपसंहार : समापन -- ३९८
परिशिष्ट :
गाथाओं के अक्षरानुक्रमी संकेत -- ३९९
स्थलानुक्रम-- ४०२
व्यक्तिनामानुक्रम --- ४०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org